26 फरवरी 2020, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 38, अंक 8, कुल पृष्ठ 36

ISSN 2454 - 5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय (आठवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर)

वीतराग-विज्ञान (439)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7100
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10100

आत्मानुभव का उपाय

सम्यक्त्वी धर्मात्मा चौथे गुणस्थान में असंयमी हो, गृहस्थदशा में व्यापार-धंधा-घरबार वर्तते हों तथापि उसके अन्तर में सदैव आत्मा के वैभव का भान वर्तता है। अरे! आठ वर्ष की बालिका को या मेंढक के आत्मा को भी ऐसे आत्मा का भान हो सकता है। यह शरीर तो ऊपर का खोल है, वह आत्मा नहीं है, आत्मा तो अन्तर में पृथक् है। वह जागकर अपने स्वरूप का भान करे तब कर सकता है। यह 47 शक्तियाँ आदि शब्द बोलना उसे भले न आये; किन्तु इन शक्तियों के वाच्यरूप भाव आत्मा में हैं, वे उसके संवेदन में आ जाते हैं। आत्मा की सम्पूर्ण प्रभुता उसकी प्रतीति में आ जाती है, स्वत: छह कारकरूप होकर निर्मल भावरूप से परिणमित होने की क्रिया उसके आत्मा में हो जाती है। अंतर्मुख होकर ऐसी क्रिया करने में ही कल्याण है, अन्य किसीप्रकार से कल्याण नहीं है। ''अरे! मेंढक और आठ वर्ष की बालिका के आत्मा भी ऐसा आत्मभान करते हैं तो मुझसे क्यों नहीं होगा? मुझमें भी ऐसी प्रभुता है और मैं भी उसका भान कर सकता हूँ'' - इसप्रकार आत्मा में उल्लास लाकर - आत्मा का विश्वास लाकर प्रयत्न करना चाहिए; जो ऐसा प्रयत्न करेगा, उसे आत्मा के आनन्द का अपूर्व अनुभव होगा ही।

- आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 480-481

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 38 (वीर नि. संवत् - 2546) 439 अंक : 8

देखे सुखी सम्यक्वान...

देखे सुखी सम्यक्वान।
सुख-दु:ख को दुखरूप विचारैं, धारैं अनुभव ज्ञान।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।1।।
नरक सातमें के दु:ख भोगें, इन्द्र लखें तिन मान।
भीख मांग कै उदर भरैं, न करैं चक्री को ध्यान।।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।2।।
तीर्थंकर पद को नहिं चावें, जदपि उदय अप्रमान।
कुष्ट आदि बहु व्याधि दहत, न चहत मकरध्वज थान।।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।3।।
आदि-व्याधि निरबाध अनाकुल, चेतन जोति पुमान।
'द्यानत' मगन सदा तिहि माहिं, नाहीं खेद निदान।।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।4।।

- कविवर पण्डित द्यानतरायजी

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 17 मई से बुधवार, 3 जून 2020 तक

कार्यक्रम स्थल :- चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.)

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

संपर्क सूत्र - ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन - 0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com

आवास प्रमुख - पण्डित सचिन शास्त्री (9924281114)
पण्डित मनीष शास्त्री (8087922580)

शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : प्रसिद्ध मोटिवेशनल वक्ता, लेखक व लोकप्रिय आध्यात्मिक प्रवचनकार, लाखों लोगों के जीवन को सही दिशा देने वाले **श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल** जयपुर को वैश्विक समृद्धि, फैशन, जीवन शैली और व्यापार पत्रिका ''पैशन विस्टा'' द्वारा देश के ''**मोस्ट एडमायर्ड ग्लोबल इंडियन**'' अवार्ड प्रदान किया गया, इस उपलक्ष्य में दिगम्बर जैन समाज बापूनगर द्वारा आपका अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर सम्भाग के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, मानद मंत्री डॉ. राजेन्द्रकुमार जैन, संयुक्त मंत्री श्री निर्मलकुमारजी संघी तथा श्री सुरेन्द्रकुमारजी मोदी द्वारा तिलक, माला, शॉल व प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती संध्या भारिल्ल भी उपस्थित थीं।

- डॉ. राजेन्द्रकुमार जैन

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

(गतांक से आगे ...)

जिनेश्वर देव आप भी कभी किसी का कुछ भी करते नहीं।
सभी गुण-पर्यायों के साथ सभी द्रव्यों को जानें सही।।
आज तक हुआ उसे जानें और होगा उसको जानें।
सभी की रग-रग पहिचानें और अपने को भी जानें।। २५ ।।

स्वयं को तन्मय हो जानें और पर को केवल जानें।
स्वयं में अपनापन भी रहे किन्तु पर को बस पर जानें।।
अरे रे अपनेपन[१] के साथ जानने को कहते परमार्थ।
और रे अपनेपन के बिना जानने को कहते व्यवहार।। २६ ।।

जानते हो तुम लोकालोक किन्तु पर में कुछ भी न करें।
जानने में तो बाधा नहीं किन्तु करने में हस्तक्षेप।।
अरे करने में हस्तक्षेप आप भी कभी नहीं करते।
और न कर सकते जिनराज! आप ऐसा ही हैं कहते।। २७ ।।

अरे रे कोइ किसी का करे किसी में ऐसी शक्ती नहीं।
ज्ञान के ज्ञेय बनें सब द्रव्य सभी में ऐसी शक्ती कही।।
अरे सामान्य गुणों में एक अनोखा ऐसा गुण भी अहा[२]।
कि जिसके कारण ही सब द्रव्य ज्ञेय बनते ही हैं - यह कहा।।२८ ।।

आपने बतलाया जिनदेव कहाँ कब क्या कैसा होगा।
जानते हैं सब ही सर्वज्ञ न उसमें फेरफार होगा।।
और सब निश्चित है हे नाथ! आप यह भी बतलाते हैं।
अतः हम सभी सहज ही रहें - आप ऐसा समझाते हैं।। २९ ।।

१. तन्मय होकर २. प्रमेयत्व गुण

अरे कुछ भी करने का भार किसी के माथे पर है नहीं।
जिसे जाना है भव से पार सहज ही जावेगा वह सही।।
निगोद से निकला है जिसतरह उसी विध होगा भव से पार।
है अरे सभी कुछ सहज बात यह करो सहज स्वीकार।। ३० ।।

जगत के भी हैं जितने काज सहज ही होते हैं जिनराज।
किसी का उसमें कुछ न चले विकल्पों से ना हो कुछ काज।।
अरे होना तो है बस वही आपने जो जाना जिनराज।
नहीं होना है उसमें फेर आपने जो देखा जिनराज।। ३१।।

विकल्पों से तो रे कुछ भी काम में होना-जाना नहीं।
किन्तु कर्मों का बन्धन तुझे नियम से होगा - समझो सही।।
बहुत ही घाटे का व्यापार अरे समझो मेरे भाई।
अधिक क्या कहें जिनेश्वरदेव नहीं उलझो इसमें भाई।। ३२।।

निगोद से अबतक सब कुछ सहज, सातवें गुण से मुक्तितलक।
सहज सब कुछ होता आया सभी को स्वीकृत है अबतलक।।
बीच का थोड़ा सा यह काल अरे इसमें भी हो सब सहज।
यही है परम सत्य सत्पंथ करो इसको भी स्वीकृत सहज।। ३३।।

अभी तक था पूरा बेहोश और अब आगे पूरा होश।
अरे ना बेहोशी में किया और जब होगा पूरा होश।।
अरे तब भी करना है नहीं और अब आया है कुछ होश।
अरे ऐसी हालत में प्रभो! अरे करने का आया जोश।। ३४।।

जोश में भाई खो मत होश और करने का कुछ मत सोच।
सभी कुछ निश्चित है हे भव्य! अरे इसके बारे में सोच।।
यही है परम सत्य भूतार्थ करे मत तू कोई संकोच।
अधिक क्या कहें जिनेश्वरदेव अरे तू सोच सोच तू सोच।। ३५।।

आज के निर्णय पर है टिका अरे तेरा भावी इतिहास।
अरे तू हो थोड़ा गंभीर धर्म में ठीक नहीं उपहास।।
अरे तू एक बार स्वीकार हृदय की गहराई में पेठ।
अरे अन्तर में गोता लगा छोड़ दे अरे व्यर्थ की ऐंठ।। ३६।।

अरे समझाते हैं जिनदेव सावधानी से सुनते सभी।
किन्तु जिसके पाँचों समवाय मुक्ति में जाने के हों अभी।।
समझ में आता है सर्वांग अकेले उसको हे भरतेश!।
शेष यों ही आते-जाते और सुनते रहते उपदेश।। ३७।।

जगत की बगिया संभली रहे अतः कुछ तो करना होगा।
उपेक्षा से तो पूरा बाग अरे बिखरा-बिखरा होगा।।
अरे रे रहे व्यवस्थित बाग बागवानी करनी होगी।
सब रहे व्यवस्था ठीक व्यवस्था करवानी होगी।। ३८।।

वनों को कौन व्यवस्थित करे और दे कौन खाद-पानी।
वे स्वयं फलें-फूलें सहज ही बिना खाद-पानी।।
हजारों पक्षी कलरव करें और चौपाये पशु विचरें।
सभी वन हरे-भरे नित रहें मिले न उन्हें खाद-पानी।। ३९।।

अरे हैं बागों से वन अधिक पालतू पशुओं से पशु अधिक।
सहज ही सब रहते सानन्द फूलते-फलते हैं सब सहज।।
सहज ही सारा जग चलता नहीं कोई कुछ करता है।
नहीं करने-धरने का काम सहज ही सहज सहजता है।। ४०।।

सहज सारी दुनियाँ चलती सहज चलता है सब संसार।
अरे तुम रहो निराकुल शान्त नहीं है भव सागर का पार।।
अरे तुम कुछ विकल्प मत करो और हो जावो भव से पार।
सहजता को स्वीकारो बन्धु सहजता जीवन का आधार।। ४१।।

अरे तुम हो जावो निश्चिन्त और तुम अपने में जावो।
स्वयं को जानो पहिचानो स्वयं में स्वयं समा जावो।।
काय चेष्टा कुछ भी मत करो और कुछ भी मत बोलो बोल।
और कुछ भी न सोचो भाई एक आतम में रमो अमोल।। ४२।।

अरे है यही धर्म का मर्म प्रभु की दिव्यध्वनि का सार।
अरे भरपूर किया रसपान भरत ने प्रमुदित हुये अपार।।
हुये वे स्वयं स्वयं में लीन और सबकुछ भूले भरतेश।
जिनेश के चरणों में झुक गये स्वयं को भूल गये अवधेश।। ४३।।

झुके ही रहे झुके ही रहे न जाने कबतक भरत नरेश।
और जब उठे उठे ही रहे शान्ति के सागर भरत नरेश।।
शान्ति के सागर भरत नरेश क्रान्ति के वाहक भरत नरेश।
एकदम अद्भुत ही लग रहे अरे मुख मण्डल के परदेश।। ४४।।

अरे रे जिनदर्शन के साथ भरत ने निजदर्शन भी किये।
भरत ने निजदर्शन भी किये और अपने में ही रम गये।।
अरे अपने में ही रम गये और अपने में ही जम गये।
जमे सो जमे जमे ही रहे अरे वे ऐसे ही रह गये।। ४५।।

भरत दीक्षा न लें ले अभी सभी मंत्रीगण चिन्तित हुये।
और चातक दृष्टि से सभी भरत की ओर देखने लगे।।
अरे आँखों आँखों में सभी मनहु[१] उनसे कुछ कहने लगे।
यद्यपि बोले कुछ भी नहीं किन्तु वे मन को पढ़ने लगे।। ४६।।

देखकर उन्हें जगत के जीव चकित हो ऐसे ही रह गये।
देखते रहे देखते रहे और सब उन्हें देखते रहे।।
हो गये अरे एकदम मुग्ध न जाने कैसा जादू हुआ।
सभी को ऐसी शंका हुई भरत दीक्षा न ले लें अभी।। ४७।।

१. मानो

किन्तु वे मन को पढ़ने लगे धैर्य भी उनका जाने लगा।
और वे होने लगे अधीर करे क्या समझ नहीं आता।।
भरत ने दिया तभी आदेश चलो अब राजमहल चलते।
पुत्र का जन्म हुआ है वहाँ सभी उनके मुख से सुनते।। ४८।।

सभी की आकुलता कम हुई सभी की चिन्ता भी कम हुई।
भरत हैं अभी एकदम सहज सहज जनता भी होने लगी।।
और सब लगे लौटने सहज हृदय में प्रभु की भक्ति लिये।
भरत भी चले महल की ओर प्रभु का चिन्तन करते हुये।। ४९।।

प्रभु का चिन्तन करते हुये प्रभु ने जो-जो बातें कहीं।
उन्हीं का घोलन करते हुये उन्हीं का मंथन करते हुये।।
उन्हीं को धारण करते हुये और अवधारण करते हुये।
उन्हीं का मनन और स्मरण विविध विध चिन्तन करते हुये।। ५०।।

महल की ओर चले भरतेश और जनता भी चलने लगी।
सभी को अपने-अपने काम याद आने लगते हैं अभी।।
भरत को भी आई अब सुनो जगतजन पुत्र जन्म की याद।
और सोचने लगे भरत उसके उत्सव की बात।। ५१।।

(दोहा)

इसप्रकार भरतेश ने, जिनवर दर्शन आज।
पूरण भक्तिभाव से, की पूजन जिनराज।। ५२।।
दिव्यध्वनि के श्रवण का, लाभ लिया भरपूर।
सबको ही आया प्रभो!, अति आनन्द अपूर्व।। ५३।।

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**

योगसार अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

क्षण में केवलज्ञान ले सके ऐसा तू है - एक क्षण में करोड़ों रुपये का बंगला नहीं बना सकता; परन्तु भगवान आत्मा परमानन्द की मूर्ति, ज्ञानसूर्य, वीतराग स्वरूपी है, इसका ध्यान करने से, इसे ध्येय बनाकर लीन होते ही एक क्षण में केवलज्ञान रूपी बंगला प्रगट कर सके - ऐसा समर्थ परमात्मा तू है।[१]

जिसकी श्रद्धा में वीतराग स्वभावी आत्मा की कीमत आई वह बारंबार कीमती चीज को याद करके स्थिर होता है। वह अल्पकाल स्थिर होता है तो उसे इतना आनन्द आता है, और यदि विशेष स्थिर हो तो क्षण में केवलज्ञान पावे अर्थात् परमात्मा हो जावे।[२]''

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी इन दोहों का भाव स्पष्ट करते हुये लिखते हैं-

''सम्यग्दृष्टि अन्तरात्मा के भीतर भेद विज्ञान की कला प्रगट हो जाती है, जिसके प्रभाव से वह सदा ही अपने आत्मा को सर्व कर्मजाल से निराला वीतराग विज्ञानमय शुद्ध सिद्ध के समान श्रद्धान करता है, जानता है तथा उसका आचरण भी कर सकता है। जिसकी रुचि हो जाती है उस तरफ चित्त स्वयमेव स्थिर हो जाता है। आत्मस्थिरता भी करने की योग्यता अविरत सम्यक्त्वी गृहस्थ को हो जाती है। वह जब चाहे तब सिद्ध के समान अपने आत्मा का दर्शन कर सकता है।

आत्मदर्शन गृहस्थ तथा साधु दोनों ही कर सकते हैं। गृहस्थ अन्य कार्यों की चिन्ता के कारण बहुत थोड़ी देर आत्मदर्शन के कार्य में समय दे सकता है, जबकि साधु गृही कार्य से निवृत्त है। उस साधु को गृह

१. योगसार प्रवचन, पृष्ठ-३५ २. वही, पृष्ठ-३५

सम्बन्धी अनेक कार्यों की कोई फिकर नहीं है, इसलिए वह निरन्तर आत्मदर्शन कर सकता है। निर्वाण का साक्षात् साधन साधुपद में ही हो सकता है, गृहस्थ में एकदेश साधन हो सकता है।[१]''

इन दोहों में यह कहा गया है कि मुनिराजों के समान सम्यग्दृष्टि ज्ञानी गृहस्थ भी आत्मा का ध्यान कर सकते हैं। हेयोपादेय के ज्ञान से सम्पन्न ज्ञानी धर्मात्मा गृहस्थ यद्यपि मुनिराजों के समान उग्र पुरुषार्थी नहीं हैं; पर वे भी अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार मुक्ति प्राप्त करने का भूमिकानुसार पुरुषार्थ कर सकते हैं, आत्मचिन्तन-मनन के साथ-साथ आत्मध्यान भी कर सकते हैं।

इसलिये मुनिराज योगीन्दुदेव गृहस्थों को प्रेरणा दे रहे हैं कि तुम भी जिनेन्द्रदेव के स्मरण और ध्यान के जरिये मुक्तिमार्ग में आगे बढ़ो। निरन्तर जिनेन्द्रदेव अर्थात् भगवान आत्मा का स्मरण करो, चिन्तवन करो और ध्यान धरो।

१. योगसार टीका, पृष्ठ-८८

वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)

समाचार पत्र का नाम	:	वीतराग-विज्ञान (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक का नाम	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं। – प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**

दिनांक : 26-2-2020 ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

छहढाला प्रवचन

अशुचि भावना

पल-रुधिर-राध-मल थैली, कीकस वसादितैं मैली।
नव द्वार बहैं घिनकारी, अस देह करे किम यारी।।८।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

देखो यह अशुचिभावना ! अशुचिभावना में मात्र शरीर की अशुचिता का ही विचार नहीं किया जाता; बल्कि चैतन्यस्वभाव की शुचिता का विचार करके उसमें एकाग्र होने की भावना भाई जाती है। अरे जीव ! तू अपने महापवित्र गुण भण्डार को छोड़कर मलिनता के भण्डार में क्या लेने जाता है? उससे भाई-बंदी क्यों करता है ? अपने स्वभाव से प्रेम क्यों नहीं करता? अहा... केवली भगवान भी जिसका बखान करते हैं, तू ऐसी चैतन्य वस्तु है, तुझसे ऊँची जगत में कोई दूसरी वस्तु नहीं है, अपने चैतन्य स्वभाव की प्रीति छोड़कर तू देह में मूर्च्छित क्यों हो गया है ? स्वभाव की प्रीति करके उसमें एकाग्र होकर सुख का अनुभव करने के लिए तुझे शरीरादि किसी की जरूरत नहीं है, तू स्वयं अपने स्वभाव की महिमा कर। स्वरूप में एकाग्र होकर सुख-शान्ति का वेदन कर सकता है। अत: भेदज्ञान द्वारा देह को अपने से भिन्न जानकर देहबुद्धि छोड़ और आत्मा में बुद्धि जोड़, इससे तुझे परम सुख होगा।

मूढ जीव मोह से ऐसा मानते हैं कि रूपवान शरीर में से सुख मिल जाएगा ? परन्तु भाई ! जिसमें अपवित्र पदार्थ भरे हैं, जिसके स्पर्श से चन्दनादि उत्तम वस्तुएँ भी अपवित्र हो जाती हैं - ऐसे शरीर से सुख कैसे मिल जाएगा? अत: उसका मोह छोड़। तेरा चैतन्यतत्त्व अनन्त पवित्र गुणों से भरा है, उसके

स्पर्श से ही आनन्द उत्पन्न होता है, उसमें उपयोग जोड़। अहा ! प्रेमपूर्वक आत्मा की बात सुनने से भी तू निहाल हो जाएगा और उसका अनुभव करने पर मोक्षसुख के नमूने का स्वाद आ जाएगा। ऐसे आत्मा को भूलकर मूर्ख जीव शरीर की ममता करते हैं तथा जरा सी प्रतिकूलता आने पर आर्तध्यान करके अशुभकर्म बांधकर भविष्य में वर्तमान से भी अधिक दु:खी होते हैं।

किसी सम्यग्दृष्टि का शरीर रोगी हो तथा मिथ्यादृष्टि का शरीर निरोगी; परन्तु यह तो सब कर्मोदय का खेल है। धर्मी तो अपने को शरीर से भिन्न जानते हैं। 'मैं धर्मात्मा हूँ, फिर भी मुझे रोग आ गया और पापी जीवों का शरीर निरोगी है' - ऐसा विचार कर वे घबराते नहीं हैं; अपितु 'शरीर में रोग हुआ, इससे मुझे क्या? शरीर का धर्म शरीर में और मेरा धर्म मुझमें, रोग तो शरीर का धर्म (स्वभाव) है। मेरा धर्म तो ज्ञान और आनन्द है, उसका शरीर से कोई संबंध नहीं, शरीर में रोग होने पर भी मैं अपने चैतन्य की निरोगी शान्ति का वेदन कर सकता हूँ' - इसप्रकार भेदज्ञान के द्वारा धर्मीजीव शान्ति का वेदन करते हैं और उसमें वृद्धि करते-करते केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष चले जाते हैं। उन्हें साधकदशा में ही मोक्ष की शान्ति का नमूना ख्याल में आ जाता है। अज्ञानी जीव क्रूर परिणामों से हिरण आदि का शिकार करके क्रूरता से नाचते हैं। वे क्रूरता बढ़ाकर नरक में जायेंगे। उनके भावों में नरक का नमूना यहीं दिखता है न ! ऐसे जीव नरक में न जायें तो कहाँ जायें? पापी जीवों के परिणामों में नरक के दु:खों का नमूना है और धर्मी जीव के परिणामों में मोक्षसुख का नमूना है।

भाई ! भगवान आत्मा पाप-पुण्यरूप मलिन परिणामों से भिन्न है, परम पवित्र है; अत: आत्मा का विचार करके उसके सन्मुख होकर उसमें एकाग्रता करके यहीं मोक्ष सुख के स्वाद का नमूना चख ले। आत्म-सन्मुखता में ही सच्ची शान्ति और पवित्रता है।

इसप्रकार अशुचि भावना का वर्णन पूरा हुआ।

आस्रव भावना

अब आस्रव भावना का वर्णन करते हुए पण्डित दौलतरामजी कहते हैं-

जो योगन की चपलाई, तातैं है आस्रव भाई।
आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवन्त तिनहें निरवेरे।।९।।

मन-वचन-काय संबंधी योगों की चंचलता द्वारा कर्मों का आस्रव होता है। ये आस्रव जीव को बहुत दु:ख देनेवाले हैं, इसलिए बुद्धिमान जीव इन्हें दूर करते हैं।

यहाँ आस्रव को दुखकार कहा है, उसमें पाप और पुण्य सभी आस्रव आ गए। सभी आस्रव दु:खकारी हैं, द्रव्यकर्म का आस्रव तो निमित्तरूप है, वास्तव में जिस भाव से कर्म का आस्रव होता है, वह मोहरूप कषायभाव ही जीव को दु:खरूप है। इसप्रकार आस्रवों को दुखरूप चिन्तन करके धर्मी जीव उनसे निवृत्त हो जाते हैं। आस्रवों को दूर करना ही आस्रव भावना है।

देखो ! कहा जाता है 'आस्रव भावना'; परन्तु उसमें आस्रव की भावना नहीं है, भावना तो शुद्ध आत्मा की है, आस्रव से छूटने की है। यदि कोई मात्र आस्रव का विचार करता रहे; परन्तु उससे पीछे हटकर आत्मसन्मुख न हो, तो सच्ची आस्रव अनुप्रेक्षा या वैराग्य भावना नहीं कही जाती। अन्य सभी भावनाओं में भी यह बात समझ लेनी चाहिए।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव समयसार गाथा ७१ में कहते हैं -

आत्मा अर आस्रवों में भेद जाने जीव जब।
जिनदेव ने ऐसा कहा कि नहीं होवे बन्ध तब।।

क्रोधादि आस्रव दु:खरूप हैं और आत्मा का स्वभाव सुखरूप है? आत्मा चैतन्य के साथ तन्मय है, क्रोधादि चैतन्य से तन्मय नहीं है - इसप्रकार आत्मा और आस्रवों का भिन्न-भिन्न लक्षणों द्वारा उनमें अन्तर और भिन्नता जानते ही यह जीव चैतन्यस्वरूप आत्मा में अपनापन और क्रोधादि आस्रवों

में परायापन मानकर स्वभावरूप परिणमने लगता है और क्रोधादि से भिन्न हो जाता है।

आस्रव भावना अर्थात् आस्रवों को रोकनेवाली भावना। कर्मों का संयोग द्रव्यास्रव है तथा उनके कारणरूप मिथ्यात्वादि भाव भावास्रव हैं। ये भावास्रव जीव को दु:खकारी हैं। पाप-पुण्य, अशुभ-शुभ आदि सभी भाव आस्रव हैं और दु:ख के कारण हैं। जिन भावों से कर्म की १४७ प्रकृतियाँ बँधती हैं, वे सभी बन्धभाव दु:ख के ही कारण हैं। आत्मा का चिदानन्द स्वभाव बन्धरहित है, उसमें कर्म का संबंध नहीं है। ऐसे स्वभाव के सन्मुख होने पर नए कर्म नहीं आते, पुराने कर्मों का बन्ध छूट जाता है, आस्रवों का निरोध होकर संवर, निर्जरा, मोक्ष प्रगट हो जाता है।

मन-वचन-काया के संबंध से आत्मप्रदेशों में चंचलता होने पर कार्माण वर्गणा के रजकण कर्मरूप होकर आते हैं तथा जीव के कषायभावों के अनुसार वे जीव के साथ बंध जाते हैं। सम्यक्त्वादि वीतरागभाव के होने पर वे कर्म स्वयमेव छंट जाते हैं। इसलिए हे भाई ! तू आस्रवों के कारणों का सेवन छोड़ और मोक्ष के कारणों का सेवन कर।

बन्ध का कारणभूत आस्रव पाँच प्रकार का है। मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग। उनमें मिथ्यात्व सबसे मुख्य है। उसका नाश किए बिना अव्रतादि भी नहीं छूटते। राग का छोटे से छोटा कण भी आस्रव है और जीव को दु:ख का कारण है; अत: उसे संवर का या सुख का कारण नहीं समझना चाहिए, संवर तो वीतरागभाव से ही होता है। सबसे पहले सम्यग्दर्शन होने पर मिथ्यात्व और उससे संबंधित इकतालीस प्रकृतियों का संवर होता है। इसप्रकार दु:खदायक आस्रवों का स्वरूप और उन्हें रोकने के उपाय का चिन्तन करके आस्रवों के कारणों का सेवन छोड़ना आस्रवभावना है। आस्रव भावना में आस्रवों को रोकने की और संवर भावना में संवर प्रगट करने की बात कही जाती है।

(क्रमश:)

नियमसार प्रवचन –

सम्यक्त्वादि भाव भाने योग्य है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९० पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलतः इसप्रकार हैं –

मिच्छत्तपहुदिभावा पुव्वं जीवेण भाविया सुइरं।
सम्मत्तपहुदिभावा अभाविया होंति जीवेण।।९०।।

(हरिगीत)

मिथ्यात्व आदिक भाव तो भाये सुचिर इस जीव ने।
सम्यक्त्व आदिक भाव पर भाये नहीं इस जीव ने।।९०।।

मिथ्यात्व आदि भाव तो इस जीव ने बहुत लम्बे काल से भाये हैं; परन्तु सम्यक्त्वादि भावों को कभी नहीं भाया।

(गतांक से आगे....)

व्यवहाररत्नत्रय और कर्त्ता-भोक्ता की बात तो जीव ने अनन्त बार सुनी है; परन्तु जीव राग का अकर्त्ता-अभोक्ता है, यह बात कभी नहीं सुनी। कोई पूछे कि ग्यारह अंग और नौ पूर्व का ज्ञान तो किया है उसका क्या हुआ? – तो कहते हैं कि नहीं भाई! तुमने पढ़ा ही नहीं और सुना ही नहीं। समवशरण में गये, भगवान की पूजा की, वाणी सुनी – यह सब कुछ किया; किन्तु परलक्ष्य से किया, स्वलक्ष्य से नहीं। 'इस ज्ञानस्वभावी आत्मा को भगवान से और उनके लक्ष्य से होनेवाले शुभराग से भी लाभ नहीं है और तू स्वतंत्र है' – ऐसी बातें सुननेलायक योग्यता से नहीं सुनी। स्वलक्ष्य से चूककर परलक्ष्य यानि राग के लक्ष्य से सुनी है, इसलिये गृहीत मिथ्यात्व भी छोड़ा – यह नहीं कहा जा सकता। स्वलक्ष्य से सुने तभी मुक्ति हो और तभी ज्ञानी के कथन की श्रद्धा हुई कही जाय और तभी उपादान-निमित्त की सन्धि मिले।

जो भव्यजीव एकबार स्वलक्ष्य से ज्ञानी के पास से चैतन्यस्वभाव की बात सुने, उसे अवश्य मोक्षप्राप्ति होवे।

स्वभाव के लक्ष्य से विकार की रुचि छोड़कर चैतन्यस्वरूप आत्मा की बात सुनें तो अवश्य मुक्ति होवे। यहाँ 'शास्त्र पढ़कर' – ऐसा नहीं कहा; किन्तु ज्ञानी के पास से सुनने को कहा है। यह उपादान-निमित्त की सन्धि बतलायी है। मैं राग और निमित्त नहीं; मैं तो ज्ञातास्वभावी हूँ – ऐसी ज्ञातास्वभाव की भनकार जिसको हुई, उसकी अल्पकाल में ही मुक्ति हो जावेगी। अतः शुद्धरत्नत्रय को स्वीकार करने और व्यवहाररत्नत्रय को असत्य करने के लिये 'नियमसार' में 'सार' शब्द जोड़ा गया है।

अपने शुद्धात्मा के आश्रय से प्रगट होनेवाली सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय नियम से निर्वाण का कारण बनती है। इतना तो 'नियम' शब्द का अर्थ हुआ और उस नियम शब्द के साथ विपरीतता के परिहार के लिये 'सार' शब्द जोड़ा गया है। व्यवहाररत्नत्रयरूप विकल्पों को अर्थात् पराश्रितभावों को अस्वीकार करके मात्र निर्विकल्प ज्ञान-दर्शन-चारित्र का ही – शुद्धरत्नत्रय का ही स्वीकार करने के लिये नियम शब्द के साथ सार शब्द जोड़ा है। व्यवहाररत्नत्रय के अभाव के लिये अथवा व्यवहाररत्नत्रय को रत्नत्रय नहीं कहने के लिये 'सार' शब्द डाला गया है। व्यवहाररत्नत्रय मोक्षमार्ग है ही नहीं, हो सकता ही नहीं; – इसी सत्य का उद्घोष करने के लिये नियमसार की रचना हुई है।

शंका : ऐसा कहने से तो एकान्त हो जावेगा।

समाधान : सम्यक्-एकान्त के बिना अनेकान्त नहीं होता। आत्मा शुद्ध चैतन्यस्वभावी है – ऐसे भान बिना शुभराग नहीं कहा जाता और स्वभाव की ओर ढले बिना ज्ञान अनेकान्त-प्रमाण नहीं होता। सम्यक्-एकान्त के बिना अनेकान्त नहीं होता, उपादान में कार्य हुए बिना निमित्त किसका? अपने में निश्चयस्वभाव प्रगट हुये बिना व्यवहार कैसा? एकरूप स्वभाव की श्रद्धा किये बिना अनेकता किसकी?

एक स्वभाव का ज्ञान होने पर अनेक भेदों का ज्ञान हो जाता है। आत्मा त्रिकाली ज्ञान-रसायनस्वरूप ही है; अतः उसका श्रद्धान-ज्ञान

करो। अरे रे! ऐसा कहकर पुरुषार्थ जागृत कराना चाहते हैं। इस ज्ञानस्वभाव में रुचि और एकाग्रता की बात सुनी नहीं, जो सुनी है, वह सब झूठी है। अज्ञानी को व्यवहार का उत्साह आता है, व्यवहार या निमित्त की बात जहाँ आती है, वहाँ उछल पड़ता है और कहता है कि देखो, यहाँ हमारी बात आई कि नहीं? किन्तु भाई! व्यवहार है, राग है, निमित्त है - इनका किसने इन्कार किया? किन्तु इनमें तू जो उमंग और उत्साह करता है, वह करने योग्य नहीं है। शुद्ध चैतन्यस्वभाव की ही रुचि और उमंग करने योग्य है। जगत में अनेक प्रकार के रस होते हैं; परन्तु इस आत्मा में तो मात्र एक ज्ञानरस ही भरा है। आत्मा त्रिकाल ज्ञानरसायनस्वरूप है, एक ज्ञानस्वरूप है, पुण्य-पाप के रसायन में वह नहीं है। अज्ञानी को स्वभाव का भान न होने पर भी ज्ञायक-स्वभाव पलटकर कभी जड़रूप नहीं हुआ। स्वरूप अभेद एकरूप है, उसकी श्रद्धा और ज्ञान करने पर धर्म होता है। व्यवहार पहले और निश्चय बाद में प्रगट होता है - यह मान्यता मिथ्या है। निश्चय के प्रकट होने पर ही राग की व्यवहार संज्ञा होती है।

अज्ञानी जीवों को व्यवहार की रुचि होती है; अतः वे कहते हैं कि प्रथम व्यवहार होना चाहिये, तत्पश्चात् ही निश्चय प्रगट होगा - यही महान विपरीतता है। अन्यमतावलम्बी भी इसीप्रकार वस्तुस्वरूप से विपरीत कहते हैं। अतः आचार्यदेव कहते हैं कि जैनकुल में जन्म लेकर भी तू इसी विपरीतता का पोषण करता है तो तुझमें और उनमें क्या अन्तर रहा? शुभाशुभ राग तो जीव अनादि से करता ही आया है, व्यवहार तो अनादि से किया ही है, फिर भी धर्म हुआ नहीं; अतः यह व्यवहार कोई अपूर्व नहीं है। रागरहित ज्ञानस्वभाव के आश्रय से प्रगट होनेवाला निश्चय ही अपूर्व है। अनादिकाल से निश्चय प्रगट नहीं हुआ और निश्चय प्रगट हुए बिना शुभराग को व्यवहार भी नहीं कह सकते। जीवों ने शुद्ध चैतन्य की महिमा कभी नहीं सुनी। अपनी पूर्वमान्यताओं को एक किनारे रखकर स्वलक्ष्य से यह बात सुने तो अवश्य समझ में आये। चैतन्य की बात सुनानेवाला ज्ञानी हो और श्रोता पात्र हो तो आत्महित हुये बिना नहीं रहे।

नियमसार गाथा ९१

मिच्छादंसणणाणचरित्तं चइऊण णिरवसेसेण।
सम्मत्तणाणचरणं जो भावइ सो पडिक्कमणं।।९१।।

(हरिगीत)

ज्ञानदर्शनचरण मिथ्या पूर्णतः परित्याग कर।
रतनत्रय भावे सदा वह स्वयं ही है प्रतिक्रमण।।९१।।

मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को पूर्णतः छोड़कर जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को भाता है, वह जीव स्वयं प्रतिक्रमण ही है।

सर्वज्ञकथित वस्तुस्वरूप से विपरीत श्रद्धा-ज्ञान-आचरण को मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र कहते हैं। इसप्रकार मूलगाथा में प्रथम नास्ति से बात है और टीका में प्रथम अस्ति बतलाकर पश्चात् नास्ति से कहते हैं।

चैतन्यस्वभाव को स्वीकार करके अर्थात् उसके आश्रय से प्रगट होने वाली सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप निर्मलपर्याय को सम्पूर्णरूपेण स्वीकार करने से और मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र को समस्त प्रकार से छोड़ने से मुनिजनों को निश्चय-प्रतिक्रमण होता है - ऐसा कहा है। स्वभाव के स्वीकार में मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र छूट जाता है।

इन्द्रों द्वारा जो पूज्य हैं और जिनकी ईश्वरता विकसित हो गई है- ऐसे सर्वज्ञदेव से प्रतिकूल कथन करनेवाले मार्गाभास हैं। वर्तमान में जैनमत को अन्यमत के साथ समन्वय करनेवाले जैन सम्प्रदाय में होने पर भी मार्गाभासी हैं; ऐसे मार्ग का श्रद्धान वह मिथ्यादर्शन हैं। तीर्थंकरदेव ने अनन्त जीव, अनन्तान्त पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और असंख्य कालाणु - इसप्रकार छहों द्रव्य स्वतंत्र देखे हैं, उससे विपरीत कथन करनेवाले अवस्तु का कथन करते हैं। एक ही आत्मा कहें, ईश्वर को जगत्कर्त्ता मानें, आत्मा को पर का कर्त्ता कहें, सर्वथा क्षणिक मानें, भूतकाल की अपेक्षा भविष्यकाल को अनन्तगुना न मानें और मात्र एक वर्तमान समय जितना ही अधिक मानें - ऐसी मान्यता से अवस्तुता हो जाती है। अवस्तु में वस्तुबुद्धि - वह मिथ्याज्ञान है। मन्दराग करके उसमें टिकना - वह मिथ्याचारित्र है। मुनिजनों की ऐसी मान्यता नहीं होती। **(क्रमशः)**

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

वीर्य शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

स्वरूपनिर्वर्तनसामर्थ्यरूपा वीर्यशक्तिः।

स्वरूप की (आत्मस्वरूप की) रचना की सामर्थ्यरूप वीर्यशक्ति है। जिसप्रकार आत्मा में ज्ञानगुण है, उसीप्रकार आत्मा में एक वीर्यगुण भी है। **यहाँ वीर्य का अर्थ बल है।** संतान उत्पन्न होने के निमित्तरूप शरीर का जो वीर्य (धातु विशेष) होता है, यहाँ उसकी बात नहीं है।

यहाँ तो वीर्य अर्थात् बल नाम की आत्मा की शक्ति है, जिस शक्ति के द्वारा आत्मा बलवान है, उस वीर्य की बात है। जो अपने स्वरूप की रचना करता है, स्वरूप को धारण करता है – ऐसे आत्मा के स्वभावरूप वीर्यशक्ति की बात है।

वीर्यशक्ति का स्वभाव आत्मा की रचना करना है। तात्पर्य यह है कि ज्ञान, दर्शन, आनन्द, प्रभुता, स्वच्छता आदि अनन्तगुणमय आत्मा का स्वरूप है। अनन्तगुणों का स्वामी होने से आत्मा ही सचमुच अनन्तनाथ है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, अनाकुल, अतीन्द्रिय आनन्द, सम्यक्वीर्य आदि निर्मलपर्यायों की रचना करना वीर्यशक्ति का कार्य है।

राग की रचना करना, जड़शरीर, मकान, समाज अथवा देश की रचना करना आत्मा की शक्ति का कार्य नहीं है।

भाई! **आत्मा में जो वीर्यशक्ति है/बल है, वह निर्मलस्वरूप की रचना करने की सामर्थ्यरूप है और जड़ की रचना करना जड़शक्ति का कार्य है।**

द्रव्य में वीर्य, गुण में वीर्य और पर्याय में वीर्य – इसप्रकार द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों में वीर्यशक्ति व्यापक है और वह वीर्यशक्ति निर्मल ज्ञान, आनन्द, प्रभुता, जीवत्व, स्वच्छत्व आदि की पर्यायों की रचना करती है।

अहो! केवली परमात्मा द्वारा बताया हुआ परमात्मा बनने का मार्ग संतों ने यहाँ प्रसाद के रूप में प्रसारित किया है। जिसप्रकार माता बालक को सुलाने के लिए उसकी प्रशंसा के मधुर गीत गाती है कि ''बेटा मेरा राजा है, नन्हा राजदुलारा है।''

इसीप्रकार संत भगवंत, केवली भगवान अज्ञानीजनों को जगाने के लिए उनकी प्रशंशा के गीत में वीरता सुनाते हैं कि जिसके स्फुरण होने पर तुम तीन लोक के नाथ होते हो- ऐसी वीर्यशक्ति के स्वामी तुम स्वयंहो।

अतः हे भाई! अब तो जागो, अब जागने का अवसर आया है। अरे भगवान! अब तेरे भगवान होने का अवसर आया है।

लोक में प्रत्येक आत्मा पूर्ण ज्ञानानन्दस्वभाव से परिपूर्ण भगवान है। अपने इस स्वरूप को लक्ष्य/श्रद्धा में लेकर एकाग्र होने पर स्वरूप की रचना करने की शक्ति और सामर्थ्यरूप वीर्यशक्ति को पर्याय में प्रगट करना कर्तव्य है और यही धर्म है।

भाई! जिन्हें सुखी होना है/संसार के दुःखों से मुक्त होना है, उन्हें स्वयं को जानना चाहिए। भगवान कहते हैं कि भगवान! तुम अनन्तशक्तियों के पिण्ड प्रभु आत्मा हो। तुम्हारी एक-एक शक्ति में अन्य अनन्त शक्तियों का रूप है। अनन्त सामर्थ्य से युक्त एक-एक शक्ति ऐसी-ऐसी

अनन्तशक्तियों से परिपूर्ण भगवान तुम चैतन्यप्रकाश के नूर के पूर हो। अभी तक तुमने ऐसे निज अंतरंगस्वरूप को देखा नहीं है। अतः चैतन्यप्रकाश के पुंज प्रभु होकर भी स्वयं अपने को भूलकर मिथ्या-अंधकार में अटके हो। ये पुण्य-पाप के भाव अंधकारमय हैं, जड़ पुण्य-पाप कर्म भी अंधकारमय है और पुण्य-पाप कर्म का फल जो स्वर्ग-नरकादि है, वह भी अंधकारमय है; क्योंकि इन सब में चैतन्यप्रकाश का अभाव है। ऐसे द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से **रहित शुद्ध-बुद्ध तुम स्वयं चैतन्यप्रकाश के पुंज आत्मा हो।**

यह वीर्यशक्ति अपने स्वदेश में सर्वत्र फैली है। अपने आत्मा के असंख्यातप्रदेश ही अपने आत्मा का स्वदेश है। रागादि पुण्य-पाप के भाव आत्मा के लिए पर देश हैं।

अहा! जिसप्रकार नरक का क्षेत्र स्वभाव से दुःखमय है, स्वर्ग का क्षेत्र स्वभाव से लौकिकसुखमय है; इसीप्रकार भगवान आत्मा का स्व-क्षेत्र स्वभाव से वीर्यशक्ति से भरपूर अतीन्द्रिय ज्ञान और अतीन्द्रिय आनन्दमय है। उसमें ज्ञान और आनन्द की फसल पकती है।

जिसप्रकार साधारण जमीन में लाल चावल उत्पन्न होता है और अच्छी उपजाऊ जमीन में सुगंधित, सफेद बासमती चावल उत्पन्न होता है; उसीप्रकार आत्मा के असंख्यातप्रदेशी क्षेत्र में निर्मल ज्ञान और आनन्द की पर्याय प्रगट होती है; परन्तु जो अपने स्वरूप को अन्तरंग में अन्तर्मुख होकर स्वीकार करता है, उसी के स्व-स्वरूप की रचना करनेवाला वीर्य सहज स्फुरायमान होता है और साथ में निज ज्ञानानन्दस्वभाव के श्रद्धान-ज्ञान का उदय होता है।

अहो! उस समय प्रगट होनेवाले अतीन्द्रिय आनन्द का क्या कहना?

वह तो वचनातीत और उपमारहित होता है। ऐसा अतीन्द्रिय ज्ञान और आनन्द जहाँ प्रगट होता है, वही आत्मा का स्व-क्षेत्र है।

प्रश्न – परन्तु फिर ये रागादि विकार कहाँ से/कैसे होते हैं?

उत्तर – अरे भाई! आत्मा में असंख्यप्रदेश हैं, उनमें विकार उत्पन्न करनेवाला कोई गुण नहीं है। जिसप्रकार सोने की चेन में सम्पूर्ण चेन तो द्रव्य है और चेन का सम्पूर्ण कड़ियोंवाला आकार उसका क्षेत्र है तथा उसका पीलापन, चिकनापन, वजन आदि शक्तियाँ हैं।

इसीप्रकार **आत्मा द्रव्य है, उसके असंख्यात प्रदेश उसका क्षेत्र है तथा असंख्य प्रदेशों में व्याप्त रहनेवाला अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य, अनन्त प्रभुता, अनन्त स्वच्छता आदि आत्मा की अनन्त निर्मल शक्तियाँ हैं।** उनमें विकार को करनेवाली कोई भी शक्ति नहीं है; परन्तु अनन्त काल में इस जीव ने कभी भी अपने स्वरूप की दृष्टि नहीं की।

अपने को भूलकर यह पर में ही अटका रहा, रुका रहा; इसलिए अनादिसे ही वीर्यशक्ति स्फुरायमान नहीं हुई और यह पुण्य-पाप रूप भावों की रचना होती रही; परन्तु यह पुण्य-पाप किसी आत्मा के वीर्य का कार्य नहीं है।

भाई! दया-दान-तप, भक्ति-पूजा आदि शुभभावों की रचना करने वाला वीर्य आत्मा का नहीं है।

आत्मा का वीर्य तो उसे कहते हैं जो अपने-अपने अनन्तगुण स्वभावों के स्वरूप की रचना अपनी-अपनी पर्याय में करता है। अनन्त गुणों की निर्मलपर्यायों को प्रगट करनेवाला आत्मा का वीर्य है। विकारी परिणामों की रचना करना आत्मा के वीर्य का काम नहीं है। (क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : द्रव्यलिंगी इतनी कठोर क्रियायें करता है, शास्त्राध्ययन भी गंभीर करता है; तथापि इन सबको स्थूल क्यों कहा ?

उत्तर : द्रव्यलिंगी क्षयोपशम की धारणा से और बाह्यत्याग से यह सब कुछ करता है। बाह्य में उसके वैराग्य भी विशेष दिखलाई पड़ता है। हजारों रानियाँ और महान वैभव-राजपाट भी उसने छोड़ दिया है, फिर भी उसका वैराग्य सच्चा नहीं है। पुण्य-पाप के परिणाम से अन्तरंग में विरक्ति उसके हुई नहीं है। स्वभाव महाप्रभु है, अनन्तानन्त गुणों का समुद्र आनन्द से परिपूर्ण है, उसकी महिमा अभी तक उसे अन्दर से नहीं आई।

प्रश्न : द्रव्यलिंगी को शुभ में ही रुचि है या अशुभ में भी?

उत्तर : द्रव्यलिंगी को शुभ में रुचि है।

प्रश्न : काया और कषाय में एकत्व है, उसका विचार उसको आता है या नहीं?

उत्तर : उसका विचार उसको नहीं आता।

प्रश्न : समयसार गाथा 3 में कहा है कि एक द्रव्य अन्य द्रव्य का स्पर्श नहीं करता। अत: जीव शरीर को तथा एक शरीर अन्य शरीर को स्पर्श नहीं करता । जीव भोजन नहीं कर सकता, बोल नहीं सकता, अन्य पदार्थों को चुरा नहीं सकता, धन-धान्यादि ग्रहण नहीं कर सकता तो मुनिराज हिंसादि पापों का त्याग क्यों करते हैं ?

उत्तर : एक द्रव्य अन्य द्रव्य को स्पर्श नहीं करता - यह तो महा

सिद्धान्त है, ऐसा ही वस्तुस्वरूप है। परद्रव्य की क्रिया से जीव को बन्ध होता ही नहीं; परन्तु परद्रव्य के लक्ष्य से होनेवाले रागादिभाव जीव को बन्ध के कारण होने से मुनिराज अपने हिंसादि पाप भावों का त्याग करते हैं, अत: पाप भावों के त्याग के निमित्तभूत बाह्य हिंसादि परद्रव्यों की क्रिया का त्याग किया- ऐसा उपचार से कहा जाता है।

प्रश्न : ज्ञान रहित वैराग्य तो रुँधा हुआ कषाय है ?

उत्तर : हाँ, आत्मा के ज्ञान-भान रहित कषाय की मन्दता के वैराग्यरूप परिणाम में कषाय दबा हुआ है, कषाय टला नहीं है। जब यह दबा हुआ-रुँधा हुआ कषाय प्रस्फुटित होगा, तभी नरक-निगोद में चला जायेगा। भले ही बाह्य में राजपाट- स्त्री-पुत्रादि छोड़े हों; तथापि आत्मभान बिना कषाय टलता नहीं, दबता है और कालक्रम से प्रस्फुटित होकर तीव्रकषाय के रूप में प्रगट होता है।

प्रश्न : भावलिंगी मुनि का लक्षण क्या है ?

उत्तर : अन्तर्मुहूर्त में छठे-सातवें गुणस्थान में आता-जाता रहे, यही लक्षण भावलिंगी मुनि का है। छठे गुणस्थान में भी अन्दर शुद्धपरिणति रहती है, वही भावलिंगीपना है। मुनिदशा में तो आनन्द का प्रचुर स्वसंवेदन होता है। चतुर्थ-पंचम गुणस्थान में भी आनन्द का वेदन होता है; किन्तु अल्प होता है। जबकि भावलिंगी मुनि के प्रचुर होता है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

समाचार दर्शन -

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी जन्म-त्रिशताब्दी वर्ष में आयोजित

मोक्षमार्गप्रकाशक विद्वत् संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

कारंजा (लाड़) (महा.) : आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी जन्म-त्रिशताब्दी महोत्सव वर्ष में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल, कारंजा के तत्त्वावधान में दिनांक 17 से 19 जनवरी तक आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी की मौलिक कृति मोक्षमार्गप्रकाशक पर आयोजित विद्वत् संगोष्ठी अनेक मांगलिक आयोजनपूर्वक सानन्द सम्पन्न हुई।

उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के अध्यक्ष श्री सतीशजी संघई ने की। इस अवसर पर **ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, विदुषी विजयाताई भिसीकर कारंजा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, विदुषी धवलश्रीजी पाटील बेलगांव** आदि विद्वत्गण मंचासीन थे।

सभा का प्रारम्भ करते हुए डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर ने संगोष्ठी की उपयोगिता व महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने संगोष्ठी की सम्पूर्ण रूपरेखा स्पष्ट करते हुए संगोष्ठियों की आवश्यकता पर विचार व्यक्त किये। उद्घाटन सभा का संचालन पण्डित चिंतामणजी भूस, कारंजा ने किया।

विद्वत् संगोष्ठी में विभिन्न पांच सत्रों के माध्यम से सम्पूर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के स्वाध्याय एवं चर्चा का लाभ उपस्थित सभी साधर्मी भाई-बहिनों को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, ब्र. अभिनन्दन कुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी राऊत औरंगाबाद, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, विदुषी धवलश्रीजी पाटील बेलगांव, पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पुणे आदि अनेक विद्वानों का विशेष सान्निध्य एवं वक्तव्य का लाभ प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन प्रात: नित्यनियम पूजन एवं श्री रत्नत्रय मण्डल विधान पण्डित अशोककुमारजी लुहाडिया, मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, राजकोट एवं पण्डित संजयजी राऊत, औरंगाबाद ने विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न कराया। इसमें गुरुकुल के छात्रों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

इसी प्रसंग पर कारंजा शहर स्थित श्री कंकुबाई श्राविकाश्रम की बालिकाओं एवं श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम के बालकों हेतु विशेष अनुरोध पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के जीवन जीने की कला विषय पर दो मार्मिक व्याख्यान भी हुए।

सायंकाल में श्री जिनेन्द्र भक्तिपूर्वक दिनांक 17 एवं 18 जनवरी को रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के शेष बचे विषयों पर चर्चासत्र का आयोजन हुआ, जिसमें समस्त उपस्थित भाई-बहिनों की अनेक शंकाओं का समाधान ऊहापोहपूर्वक विद्वानों द्वारा किया गया। रात्रिकालीन चर्चासत्र का संचालन पण्डित संयमजी जैन, नागपुर एवं विदुषी प्रज्ञाजी जैन, देवलाली ने किया।

दिनांक 19 जनवरी को प्रात: पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली के क्रिया-परिणाम-अभिप्राय पुस्तक का मराठी अनुवाद एवं गुरुकुल शतकपूर्ति के उपलक्ष्य में डाक टिकट का विमोचन श्री चन्द्रमोहनजी शहा, सोलापुर द्वारा किया गया।

यह संगोष्ठी मुख्यरूप से महाराष्ट्रप्रान्तीय शास्त्री विद्वानों हेतु आयोजित की गई थी, जिसमें 36 वक्ता विद्वानों के साथ महाराष्ट्रप्रान्तीय 56 शास्त्री विद्वान उपस्थित थे तथा सांगली, कोल्हापुर, बेलगांव, हुबली, औरंगाबाद आदि स्थानों से पधारे 435 साधर्मीजनों ने संगोष्ठी का लाभ लिया।

संगोष्ठी में श्री स्वानुभव स्वाध्याय मण्डल, औरंगाबाद के समस्त मुमुक्षु साधर्मी एवं कारंजा गुरुकुल के समस्त ट्रस्टीगणों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। संगोष्ठी के आमंत्रणकर्ता श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल कारंजा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा थे। **– श्री प्रमोद चवरे, श्री सुहास चवरे, श्री परिमल रुईवाले**

7वाँ युवा शिविर संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 29 से 31 दिसम्बर 2019 तक 7वें अन्तरराष्ट्रीय युवा शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित उर्विशजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सम्मेदजी नातेपुते, पण्डित मंथनजी गाला मुम्बई, पण्डित अनुभवजी खनियांधाना आदि विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर गोष्ठी व प्रवचनों के माध्यम से लाभ मिला। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक अन्ताक्षरी, ट्रेजर हंट, वाद-विवाद प्रतियोगिता, आध्यात्मिक क्रिकेट, म्यूजिकल चेयर आदि अनेक ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। शिविर में 250 साधर्मियों ने लाभ लिया। **– नितिनभाई शाह, उल्लासभाई जोबालिया**

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाएं संपन्न

(1) सनावद (म.प्र.) : यहाँ ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के गृहनगर में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम ट्रस्ट एवं श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, सनावद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मंगलवार, दिनांक 7 जनवरी से रविवार 12 जनवरी तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई अहमदाबाद, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित गुलाबचंदजी बीना आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हेभैया सागर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन के सहप्रतिष्ठाचार्यत्व में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित रमेशजी सनावद, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनचंदजी कोटा, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ, पण्डित अनेकान्तजी रहली के सहयोग से संपन्न हुआ। महोत्सव का मंच संचालन व निर्देशन पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं सह-निर्देशन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन द्वारा किया गया।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती मीना-राजकुमार जैन (पुट्ठा मिल) भोपाल को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री विनी-मीनल बड़जात्या इन्दौर, कुबेर इन्द्र श्री राहुल-सुनीता गंगवाल जयपुर एवं यज्ञनायक-नायिका श्री जिनेश-रुपम जैन (लॉरेल शर्ट) इन्दौर थे। महोत्सव का मंच उद्घाटन श्री जयकुमार-इन्दू जैन परिवार रतलाम ने, सिंहद्वार का उद्घाटन श्री राजेन्द्रजी मोदी भोपाल, श्री प्रणवजी चौधरी भोपाल व श्री ज्ञानचंदजी अशर्फी भोपाल ने, यागमण्डल विधान का उद्घाटन श्री वज्रसेन-सुनीता, श्री शोभित जैन परिवार विश्वासनगर दिल्ली ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री अशोक-रितु जैन इन्दौर ने किया।

दिनांक 9 जनवरी को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री अशोकजी जैन अरिहंत कैपिटल इन्दौर को मिला। सायंकाल विश्वप्रसिद्ध 70 फीट का मणिमंडित विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री जयकुमार-इंदूजी, श्री निलय-संगीताजी व साकेतजी जैन परिवार रतलाम ने किया एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री नेमिषभाई शाह एवं श्री अनंतभाई शेठ परिवार मुम्बई ने किया।

इस पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर और आकर्षक 38 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। महोत्सव में ज्ञानकल्याणक के दिन सायंकाल बा. ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली को ऐरावत हाथी पर बैठाकर बैण्ड बाजों सहित मंच पर लाया गया तथा मुमुक्षु सम्मान समारोह समिति द्वारा तत्त्वप्रचार में उनके आजीवन विशेष योगदान हेतु विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर ने किया। इस प्रसंग पर ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री के संस्कार सुधा विशेषांक का विमोचन किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 4500-5000 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

(2) बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ शान्ति वाटिका में श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट बड़नगर के तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 2 से 7 फरवरी तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याणकों के संदर्भ में प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया आदि विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हेभैया सागर, ब्र. मनोजजी जबलपुर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन के सहप्रतिष्ठाचार्यत्व में पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित मनीषजी पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित अनेकान्तजी कोलारस, पण्डित मयंकजी बण्डा, पण्डित आदित्यजी पंचोलिया, पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना के सहयोग से संपन्न हुआ। महोत्सव का मंच संचालन व निर्देशन पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर व पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन द्वारा किया गया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती संगीता-अनिलकुमारजी पाटोदी, बड़नगर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री हेमन्तकुमार-सुनीताजी गोधा बड़नगर, कुबेर इन्द्र श्री राजेन्द्रकुमार-अनिताजी काला बड़नगर एवं यज्ञनायक-नायिका श्री राजकुमार-अंजनाजी शाह इन्दौर थे। महोत्सव के मंदिर का उद्घाटन श्रीमती

प्रज्ञा-विवेकजी कासलीवाल नीमच ने, ध्वजारोहण श्रीमती तीजाबाई स्व. कल्याणमलजी दोशी परिवार बड़नगर ने, सिंहद्वार का उद्घाटन श्री राजेन्द्रकुमारजी पाटनी छिन्दवाड़ा ने, यागमण्डल विधान का उद्घाटन श्री डी.एस.-शशिजी चौधरी नीमच ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री जयकुमारजी निलयजी संकेतजी जैन रतलाम ने किया।

दिनांक 4 फरवरी को विश्वप्रसिद्ध 70 फीट का मणिमंडित पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री डी.एस.-शशिजी चौधरी नीमच ने किया एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री कासलीवाल परिवार बड़नगर ने किया। इस पंचकल्याणक में 11 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। महोत्सव में तपकल्याणक के दिन सायंकाल वीतराग-विज्ञान पाठशाला, बड़नगर द्वारा '**रानी चेलना**' नामक नाटक का मंचन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 2500 साधर्मियों ने लाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

ब्र. यशपालजी जैन (अन्नाजी) का अभिनन्दन

कारंजा (लाड) (महा.) : आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी जन्म-त्रिशताब्दी महोत्सव वर्ष में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल, कारंजा (लाड़) के तत्त्वावधान में आयोजित विद्वत् संगोष्ठी के पावन अवसर पर दिनांक 19 जनवरी को प्रात: जिनवाणी कण्ठपाठ प्रेरक, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रकाशन मंत्री आदरणीय ब्र. यशपालजी जैन (अन्नाजी) का अभिनन्दन समारोह मंगलमयी वातावरण में सम्पन्न हुआ। अभिनन्दन के पूर्व उपस्थित सभी महाराष्ट्र प्रान्तीय शास्त्री विद्वानों ने एवं वरिष्ठ विद्वानों ने भक्ति एवं बाजे-गाजे के साथ अन्नाजी को मुख्य मंच तक लाकर उन्हें कंधों पर उठाकर मंचासीन कराया गया। तत्पश्चात् जयकारे की ध्वनिपूर्वक अभिनन्दन सभा का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के अध्यक्ष श्री सतीशजी संघई ने की। सर्वप्रथम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं महावीरजी पाटील, सांगली ने उनके सम्पूर्ण जीवन को बताते हुए विचार व्यक्त किये। साथ ही श्री राजाभाऊ डोणगांवकर एवं श्री अशोक चवरे, कारंजा ने उनसे संबंधित जीवन की घटनाओं का स्मरण किया एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने प्रशस्ति वाचन करते हुए अपना उद्बोधन दिया।

तत्पश्चात् श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के अध्यक्ष श्री सतीशजी संघई ने माल्यार्पण, श्री भरतभाऊजी भोरे ने शॉल, श्री कीर्तिभाऊजी भोरे ने श्रीफल, श्री राजाभाऊ डोणगांवकर ने धर्मदुपट्टा तथा समस्त ट्रस्टियों ने उन्हें प्रशस्तिपत्र भेंट करते हुए उनका

स्वागत किया। पण्डित आलोकजी शास्त्री एवं सौ. ज्योति आलोक जैन ने श्रीफल एवं जिनवाणी भेंटकर उनका सम्मान किया।

इसके अतिरिक्त देश की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि के रूप में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महा. जयपुर की ओर से प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् की ओर से अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, तीर्थधाम मंगलायतन की ओर से पण्डित अशोकजी लुहाडिया, महाराष्ट्र शास्त्री स्नातक परिषद् प्रतिनिधि के रूप में श्री महावीरजी पाटील सांगली, श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल, नागपुर की ओर से श्री अशोकजी जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री, श्री नरेशजी जैन, श्री सुदीपजी जैन, सत्पथ फाउन्डेशन, नागपुर की ओर से पण्डित विपिनजी जैन नागपुर तथा देश के हिंगोली, परभणी, औरंगाबाद, बेलगांव, हुबली, सांगली, कोल्हापुर, पुणे आदि अनेक स्वाध्याय मण्डल के मुमुक्षु भाई-बहिनों द्वारा जिनवाणी की अगाध सेवा हेतु उनका सम्मान करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की गई।

दिनांक 18 जनवरी को रात्रि में चर्चासत्र के पूर्व अन्नाजी हेतु विशेष कण्ठपाठ स्पर्धा का आयोजन किया गया, जिसमें गुरुकुल के छात्र दर्शन सोने, अभिषेक आदि पांच छात्रों ने तथा कु. गाथा जितेन्द्र राठी ने तत्त्वार्थसूत्र, आर्जव चिंतामण भूस ने छहढाला, पर्व प्रसन्न शेटे ने देव-शास्त्र-गुरु जयमाला सुनाई, जिसकी सभी ने अत्यधिक सराहना की। ये तीनों बालक-बालिका 3 से 5 वर्ष आयु के थे। अन्त में अध्यक्षीय मनोगत के पश्चात् आदरणीय अन्नाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए स्नातकों से कहा कि अभिनन्दन की अपेक्षा रखे बिना अभिनन्दनीय कार्य करना श्रेयस्कर है। श्री सतीशजी संघई ने आभार व्यक्त किया।

– श्री प्रमोद चवरे, श्री सुहास चवरे, श्री परिमल रुईवाले

IMPC-2020 अनेक उपलब्धियों के साथ संपन्न

मुम्बई : यहाँ विले पार्ले स्थित श्री सीमंधरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में JAINEXT - The Next Generation Jains संगठन द्वारा आयोजित Inter Mumbai Pathshala Competition - 2020 (IMPC) श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट पार्ला-सांताक्रुज के सौजन्य से दिनांक 16 फरवरी को संपन्न हुआ।

इस प्रतियोगिता में मुम्बई के विभिन्न उपनगरों की 23 पाठशालाओं के 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल के माध्यम से सहस्राधिक लोगों ने ऑनलाईन देखा।

इस अवसर पर प्रात: 7 से रात्रि 8 बजे तक अनेक ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का संचालन किया गया, जिसमें जिनेन्द्र-पूजन, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के पश्चात्

प्रतियोगिताओं का उद्घाटन हुआ। प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत भजन, भाषण, वाद-विवाद, कथा-कथन, प्रश्नोत्तरी, अन्ताक्षरी, लघु-नाटिका, निबंध, चित्रकला, प्रोजेक्ट तथा Memes making जैसी 11 प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्रतियोगिताओं में सभी बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुम्बई की पाठशालाओं में प्रथम स्थान सीमंधर जिनालय झवेरी बाजार एवं द्वितीय स्थान सर्वोदय संस्कार शाला घाटकोपर ने प्राप्त किया।

सभी कार्यक्रम JAINEXT संगठन के कार्यकर्ताओं के सहयोग से संपन्न कराये गये। अन्त में सभी अध्यापकों, कार्यकर्ताओं व मुमुक्षु समाज का आभार व्यक्त किया गया।

कुन्दकुन्द जयंती संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 30 जनवरी को कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्ददेव की जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर प्रात:काल श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के समस्त छात्रों एवं स्थानीय साधर्मियों ने मिलकर विशेष पूजा की। सायंकाल 7 बजे आचार्य कुन्दकुन्द पर बनी एनिमेशन फिल्म दिखाई गई। तदुपरान्त जयन्ती सभा का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्रीमती कमला भारिल्ल, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री आदि महानुभाव उपस्थित थे।

सभा को संबोधित करते हुए डॉ. भारिल्ल ने कहा कि आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने स्वयं को देखने का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जहाँ अन्य दार्शनिक मारने या बचाने की प्रेरणा देते हैं, वहीं आचार्य कुन्दकुन्द ने बताया कि कोई भी जीव किसी अन्य जीव को न मार सकता है और न ही बचा सकता है। आत्मकल्याण ही उनके प्रतिपाद्य का एकमात्र बिन्दु है।

डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं डॉ. सुषमाजी सिंघई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। छात्रों के अन्तर्गत अभिषेक जैन देवराह, समकित जैन ईसागढ, अंकुर जैन खड़ैरी, मयंक जैन बण्डा ने काव्य पाठ के माध्यम से, शुभांशु जैन जबलपुर ने आचार्यदेव का आचार्यदेव का भाषा-सौष्ठव व तत्कालीन परिस्थिति विषय पर, पवित्र जैन आगरा ने चतुर्विध संघ विभाजन विषय पर, संयम जैन दिल्ली ने आचार्य कुन्दकुन्द की दार्शनिकता विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किए। शास्त्री तृतीयवर्ष के अर्पित जैन भिण्ड द्वारा बनाये गये आचार्यदेव के सुन्दर चित्र का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने, संचालन शास्त्री तृतीयवर्ष से स्वप्निल जैन सिवनी व मयंक जैन बण्डा ने एवं निर्देशन डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

राष्ट्रीय जैनदर्शन विद्वत् संगोष्ठी संपन्न

हस्तिनापुर (उ.प्र.) : यहाँ निर्माणाधीन तीर्थधाम चिदायतन की पावन धरा पर जैन विद्या शोध संस्थान-संस्कृति विभाग उत्तरप्रदेश एवं दिव्य देशना ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उस्मानपुर व मेरठ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय जैनदर्शन विद्वत् संगोष्ठी दिनांक 13 से 16 फरवरी तक सानन्द संपन्न हुई।

गोष्ठी का संयोजन डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर ने किया।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर, ब्र. सुजाताताई रोटे, पण्डित सचिनजी अकलूज मंगलायतन, ब्र. अमित भैया विदिशा, पण्डित जे.पी. दोशी मुम्बई आदि अनेक वरिष्ठ विद्वानों का विशेष सान्निध्य, समागम एवं वक्तव्य का लाभ मिला। साथ ही पण्डित शुभमजी, पण्डित समर्थजी, पण्डित चर्चितजी, पण्डित अनुभवजी, पण्डित अच्युतकांतजी, पण्डित मंथनजी आदि अनेक युवा विद्वत् प्रतिभाओं का भी परिचय हुआ।

छ: सत्रों में आयोजित इस संगोष्ठी में तत्त्वविचार और आत्मानुभूति, उपयोग, श्रावकाचार, श्रमणाचार, पांच समवाय, कर्म मीमांसा आदि विषयों पर लगभग 50 विद्वानों द्वारा सहस्राधिक साधर्मियों की उपस्थिति में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया।

गोष्ठी को सफल बनाने में पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, विदुषी प्रज्ञाजी देवलाली, पण्डित ऋषभजी शास्त्री शंकरनगर, पण्डित अमनजी शास्त्री कृष्णानगर आदि विद्वानों का सक्रिय सहयोग रहा। इस अवसर पर श्री अजितप्रसादजी-वैभव जैन दिल्ली, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री स्वप्निलजी मंगलायतन, श्री नरेशजी नागपुर, श्री सुरेशजी ऋतुराज, प्रो. अभयकुमारजी लखनऊ, श्री विलासभाई शिकागो आदि देश-विदेश से अनेक विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

स्वरूप ग्रहण की उग्रता चाहिये। कहीं भी चैन नहीं पड़े, विकल्प के जाल में भी चैन नहीं पड़े, कहीं भी सुख नहीं लगे, इतनी अंतर में उग्रता होनी चाहिये। स्वयं का अस्तित्व ग्रहण करे उसे सहज आनन्द अंतर मेंसे प्रगट होता है। **– आत्मधर्म, अगस्त-2019 पृष्ठ 5**

शोक समाचार

सोनगढ (गुज.) निवासी ब्र. पुष्पाबेन छोटालाल शाह का 88 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप 12-13 वर्ष की आयु से ही सोनगढ में रह रही थीं। आपने जीवनभर गुरुदेवश्री का प्रत्यक्ष लाभ लिया और उनके द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान को अपने जीवन में उतारा।

टोडरमल स्मारक एवं विद्यार्थियों के प्रति आपके हृदय में भरपूर वात्सल्यभाव रहता था। आप जब भी जयपुर पधारती थीं, यहाँ छात्रों को देखकर आपको बहुत प्रसन्नता होती थी। जयपुर से कोई विद्वान/छात्र सोनगढ आया है, यह पता चलते ही आप उसे मिलने जरूर बुलाती और सभी की कुशलक्षेम पूछती थीं। ज्ञातव्य है कि आप ब्र. सुशीलाबेन, रजनीभाई दादर एवं हंसमुखभाई शाह पार्ला की बहिन थीं।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

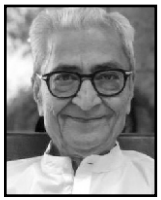

कांतिभाई मोटानी नहीं रहे

मुमुक्षु समाज के प्रमुख स्तम्भ, गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त, मुमुक्षु मण्डल मुम्बई व देवलाली ट्रस्टी के ट्रस्टी **श्री कांतिलाल रामजीभाई मोटानी मुम्बई** का दिनांक 18 फरवरी को 87 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित होने वाली तत्त्वज्ञान की प्रत्येक गतिविधि में आपका तन-मन-धन से न केवल भरपूर सहयोग रहता था; अपितु आप यथाशक्ति उसका लाभ भी उठाया करते थे। आप देवलाली ट्रस्ट से प्रकाशित गुरुप्रसाद नामक आध्यात्मिक मासिक पत्रिका के आप तंत्री थे।

आपने डॉ. भारिल्ल की अनेक कृतियों का गुजराती भाषा में अनुवाद किया है। पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आपका महत्वपूर्ण योगदान था। टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के प्रति आपका भरपूर स्नेह रहता था। आपके निधन से संस्था ने अपना एक गहरा शुभचिंतक खो दिया है।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

परद्रव्य कोई जबरन् तो बिगाड़ता नहीं है, अपने भाव बिगड़ें, तब वह भी बाह्य निमित्त है। तथा इसके निमित्त बिना भी भाव बिगड़ते हैं, इसलिये नियमरूप से निमित्त भी नहीं है। इसप्रकार परद्रव्य का तो दोष देखना मिथ्याभाव है, रागादि भाव ही बुरे हैं... **- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 244**

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर में विराजमान होने वाली 1143 प्रतिमाओं का दृश्य

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20*

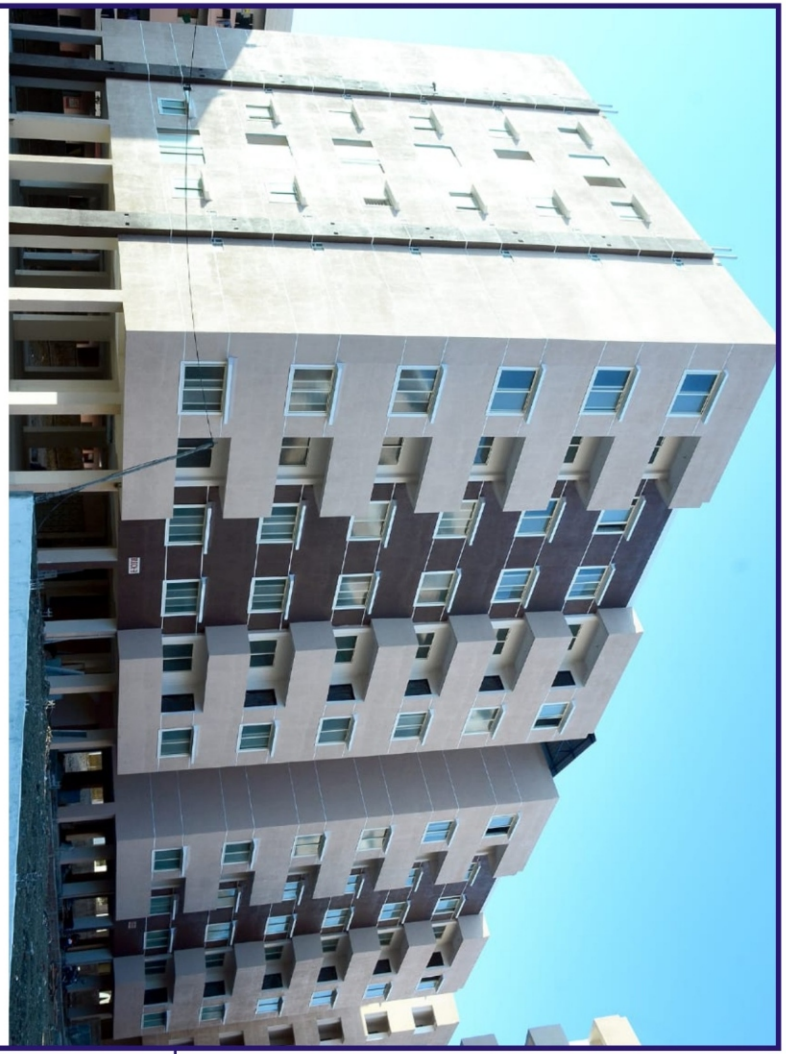

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर में स्थित कहान सोसायटी में 3BHK फ्लेटों का कार्य पूर्ण

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 24 फरवरी 2020

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**